अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2012) | दिनांक 24.12.2012

तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ – पुण्य, पाप – 50

प्र.1 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 20

(क) वन्दना से जीव क्या प्राप्त करता है?

(ख) हास्य मोहनीय से क्या होता है?

(ग) मनुष्य भव को कौन हार जाते हैं?

(घ) संहनन कितने हैं? नाम लिखें।

(ङ) प्रवचन वत्सलता से आप क्या समझते हैं?

(च) पाप का उदय होने से जीव को क्या करना चाहिए?

(छ) जीव अकर्कश वेदनीय कर्म का बन्ध कैसे करते हैं?

(ज) दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम से जीव को क्या प्राप्त होता है?

(झ) देव आयुष्य बंध में संयमासंयम का क्या अर्थ है?

(त्र) अपर्याप्त नाम किसे कहते हैं?

(ट) पुण्य की बांछा करने से जीव क्या प्राप्त करता है?

(ठ) सम्यक् मिथ्यात्व और सम्यक्त्व मोहनीय को पाप प्रकृतियों में क्यों नहीं लिया गया?

प्र.2 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) तीर्थंकर गौत्र बंध के कितने हेतु हैं? नाम लिखें?

(ख) शुभ आयुष्य कर्म और उसकी उत्तर प्रकृतियों का वर्णन करें।

(ग) सिद्ध करें कि पाप स्वयंकृत है?

(घ) देहादि का कारण माता–पिता प्रत्यक्ष है फिर अदृष्ट कर्म क्यों माना जाए?

प्र.3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए – 20

(क) जीव कर्म ग्रहण किस प्रकार करता है?

(ख) पुण्य और पाप के विकल्प क्या–क्या हैं?

(ग) सर्व तिर्यंच आयुष्य कर्म, सर्व मनुष्यायुष्य कर्म व सर्व देवायुष्य कर्म शुभ क्यों नहीं हैं?

(घ) योग किसे कहते हैं? सिद्ध करें कि पुण्य निरवद्य योग से होता है?

अवबोध : निर्जरा से देवगति – 30

प्र.4 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दें – 9

(क) निर्जरा की परिभाषा लिखें।

(ख) क्या बन्ध से नए कर्मों का भी बन्ध होता है?

(ग) मोक्ष में भाव कितने व कौन से हैं?

(घ) मोक्ष प्राप्ति जिस चरम शरीर से होती है उसमें संहनन व संस्थान कौनसा?

(ङ) क्या अकर्मभूमि से सिद्ध हो सकते हैं?

(च) देवों में पर्याप्ति पाँच ही क्यों होती है?

(छ) व्यन्तर देवों का स्थान नीचे है फिर ऊपर क्यों आते हैं?

(ज) केवली समुद्घात स्वतः होता है या किया जाता है?

(झ) बन्ध के चार प्रकार में मूल बन्ध कौन सा है?

(ञ) चवदहवें गुणस्थान में कौनसी निर्जरा मानी गई है?

(ट) देव किसे कहते हैं?

(ठ) पहले निर्जरा होती है या पुण्य का बन्ध?

प्र.5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में दीजिए – 12

(क) ज्योतिष देव कहाँ रहते हैं?

(ख) निर्जरा से प्राप्त बत्तीस आत्मगुणों में कितने उजला लेखे निरवद्य हैं और कितने करणी लेखे?

(ग) क्या बंधी हुई कर्म वर्गणा का परोक्षज्ञानी ज्ञान या अनुभव कर सकते हैं?

(घ) अपने आप होने वाली निर्जरा को क्या तत्त्व के अन्तर्गत माना है?

(ङ) सिद्ध क्या करते हैं?

(च) व्यन्तर के कितने प्रकार हैं नाम लिखें?

(छ) क्या एकेन्द्रिय में भी एकाभवतारी होते हैं?

(ज) कर्म के कर्म लगता है या आत्मा के कर्म लगता है?

प्र.6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित दें – 9

(क) क्या देवयोनि में नींद और वेदनीय का भी विपाकोदय होता है?

(ख) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने में क्या अर का प्रभाव पड़ता है?

(ग) निर्जरा तो आठों कर्मों की होती है फिर वर्णन चार घाति कर्मों की निर्जरा से प्राप्त गुणों का ही क्यों आता है?

(घ) कर्म बन्ध के हेतु कौन–कौन से हैं?

(ड.) तीर्थ प्रवर्तन से पूर्व भी क्या कोई मोक्ष जा सकता है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप) – 20

प्र.7 कोई तीन पद्य अर्थ सहित लिखें – 15

(क) ''भय रो घालियो.....किहां थी थाय ए''।

(ख) ''आरम्भ कियां नहीं.....निर्जरा लिगार ए''।

(ग) ''गणिकादिक.....तिण रो नाम ए''।

(घ) ''इणरो नही जाण.....घालियो ए''।

(ङ) ''इविरत स्यूं.....पारिखा ए''।

प्र.8 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 5

(क) सुपात्र दान देकर जो अभिमान नहीं करता उसको क्या प्राप्त होता है?

(ख) असंयति को खिलाने में क्या धर्म है?

(ग) किरतनीया आदि को दिया जाने वाला दान कौनसा दान है?

(घ) मुक्ति का मार्ग कौनसा दान है?

(ङ) धर्म दान के प्रकार लिखें?

(च) कतन्ती दान किसके समान है?

(छ) श्रावक का पोषण करने में धर्म किसने माना है?